# विशाखपट्टणम में समुद्री पख मछलियों के डिम्भक पालन के लिए पुनः परिसंचरण जलजीव पालन प्रणाली (आर ए एस) का समर्पण और "इंडियन पोम्पानो" कृषक प्रशिक्षण होस्टल का उद्घाटन

पुनः परिसंचरण जलजीव पालन प्रणाली (आर ए एस)– नियंत्रित अवस्था में कम जल का उपयोग एवं प्रभावी प्रबंधन कार्यों के ज़रिए समुद्री पख मछली पालन के लिए एक प्रणाली है। भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में दिनांक 20.03.2023 को डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ ने पख मछलियों के डिम्भक पालन के लिए स्वदेशी रूप से विकसित आर ए एस प्रणाली को समर्पित किया।यह आर ए एस प्रणाली भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में पूरी तरह विकसित एवं मानकीकृत की गयी थी और भारतीय समुद्री संवर्धन के लिए यह लाभप्रद है क्योंकि 11.20 रुपए में 12 ग्रा. मछली बीज का उत्पादन कर सकता है। पहले, केंद्र में आर ए एस प्रणाली ब्रूडस्टॉक विकास एवं प्रजनन के लिए उपयोग की जाती थी जबकि जल का पुनः परिसंचरण करके पानी की बर्बादी को रोकी जा सकती है। हालाँकि 0.5 ग्रा. औसत आकार में मछली बीज के पालन के लिए स्वदेशी एवं मानकीकृत आर ए एस का उपयोग पहली बार किया जा रहा है। डॉ.ए.गोपालकृष्णन ने कहा कि देश के समुद्री संवर्धन अनुसंधान के लिए यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है और इस क्षेत्र में अनेक उद्यमियों को निवेश का मार्ग खोलेगा। इसके अलावा, भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में आर ए एस में भारतीय पोम्पानो के नर्सरी पालन पर मछली पालनकारों, छात्रों एवं उद्यमियों को दिए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों से यह सुनिश्चित होगा कि भविष्य में इसके उत्पादन को आगे बढाने के लिए कुशल मानव शक्ति उपलब्ध हैं।

निदेशक ने भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में 'भारतीय पोम्पानो' नामक नए निर्मित कृषक प्रशिक्षण

होस्टल का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण होस्टल में चार ए सी डबल कमरे के साथ प्रशिक्षुओं के लिए छात्रावास सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। "इंडियन पोम्पानो" नाम पर विस्तार से बताते हुए डॉ.ए.गोपालकृष्णन ने कहा कि भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र भारतीय पोम्पानो के प्रजनन, बीज उत्पादन, डिम्भक पालन एवं पालन का अग्रणी केंद्र है, अतः यह नाम अत्यंत उपयुक्त है।

भारतीय पोम्पानो एक प्रमुख समुद्री मछली है जो पोम्फ्रेट की तरह समुद्री पिंजरों में सफलतापूर्वक पालन किया जा सकता हैं। यह प्रजाति देश में समुद्री संवर्धन की क्रान्ति का नेतृत्व करने में सबसे आगे रही है और अनेक मछली पालनकार तालाब और पिंजरे में इस मछली का पालन कर रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान निदेशक ने विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र के प्रोफाइल सहित प्रकाशनों तथा दो उत्पादों जो कि – कडलमीन नान कोन एवं भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ समुद्री सूक्ष्मजीव संघ (एम एम सी) का विमोचन किया। कडलमीन नान कोन स्वदेशी और पैक किया गया *नोनोक्लोरोप्सिस ओक्युलेटा* है जो रोटिफरों का खाद्य है और पख मछली स्फुटनशालाओं में डिम्भकों के लिए जीवित चारा के रूप में अनिवार्य हैं। इस उत्पाद की शेल्फ लाइफ 5 महीने है और आवश्यकतानुसार पुनर्गठित किया जा सकता है। अन्य उत्पाद भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ एम एम सी है जो नर्सरी और पालन प्रौद्योगिकी प्रणालियों में पालित समुद्री पख मछली के लिए स्वदेशी रूप से विकसित मल्टी – स्ट्रेन प्रोबायोटिक अनुपूरक हैं।

इसकी जीवाणुरोधी गतिविधि पिंजरे में पालित मछलियों की वृद्धि, अतिजीविता एवं आंत का स्वास्थ्य सुधारने में मदद करती है। इस अवसर पर तीन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए जो कि पहला, भारतीय पोम्पानो के ब्रूडस्टॉक विकास एवं बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी के लिए एम एस आर अक्वा प्रा.लिमिटड के साथ, दूसरा, भारतीय पोम्पानो के समुद्री पिंजरा पालन के लिए तकनीकी सेवाएँ प्रदान करने के लिए सुश्री रेवती भंडारु के साथ और तीसरा समुद्री शैवाल पैदावार में तकनीकी सेवाएँ प्रदान करने के लिए लया एन जी ओ के साथ। डॉ.जे.चार्ल्स जीवा, प्रभारी अध्यक्ष एवं डॉ. शुभदीप घोष, पूर्व प्रभारी अध्यक्ष, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र ने इस अवसर पर भाषण दिए।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक पुस्तक का विमोचन करते हुए

डॉ ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ आर ए एस प्रणाली का उद्घाटन करते हुए